डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 12, धार्मिक बहुलवाद

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल धर्म के दर्शन पर अपने व्याख्यान में बोल रहे हैं। यह सत्र 12 है, धार्मिक बहुलवाद।

ठीक है, हम धार्मिक बहुलवाद के बारे में बात करने जा रहे हैं, जो आज के समय में बहुत से लोगों के बीच एक बड़ी चिंता का विषय है, न केवल विद्वानों के बीच, बल्कि सड़क पर चलने वाले एक आम व्यक्ति के बीच, जो इस तथ्य के निहितार्थों के बारे में सोच रहा है कि दुनिया में सभी प्रकार के धर्म हैं, दस या बारह प्रमुख धर्म और फिर सैकड़ों अन्य भी।

क्या एक सच्चा धर्म है, या ईश्वर तक पहुँचने के कई रास्ते हैं? यही सवाल यहाँ है। तो, हम धार्मिक बहुलवाद की समस्या के बारे में बात करेंगे। तो यहाँ मुख्य विचार हैं।

धार्मिक बहुलवाद के रूप में जाना जाने वाला एक दृष्टिकोण है, जो यह विचार है कि कई अलग-अलग धर्म परम वास्तविकता की ओर ले जाते हैं कि आप कई अलग-अलग धर्मों के माध्यम से मोक्ष पा सकते हैं। फिर, धार्मिक बहिष्कार के रूप में जाना जाने वाला एक दृष्टिकोण है, जो यह विचार है कि केवल एक ही धर्म सच्चा है और परम वास्तविकता की ओर ले जाता है। एक कम-ज्ञात दृष्टिकोण, जिसे धार्मिक समावेशवाद के रूप में जाना जाता है, वह यह विचार है कि एक सच्चा धर्म है, लेकिन सभी धार्मिक भक्त सच्चे धर्म के गुप्त अनुयायी हैं।

तो ये तीन मानक दृष्टिकोण हैं: बहुलवाद, बहिष्कारवाद और समावेशवाद। तो, आइए बहुलवाद दृष्टिकोण के एक प्रमुख समर्थक पर नज़र डालें, जो जॉन हिक हैं, जो 20वीं सदी और 21वीं सदी में धर्म के एक प्रमुख दार्शनिक हैं। हिक का प्रस्ताव है कि मोक्ष की विभिन्न प्रणालियों को, जैसा कि वे कहते हैं, एक गहन असंतोषजनक स्थिति से एक ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन की अधिक मौलिक अवधारणा के विभिन्न रूपों के रूप में देखा जाना चाहिए जो असीम रूप से बेहतर है क्योंकि यह सही मायने में वास्तविकता से संबंधित है।

इसलिए, हमारे पास ये सभी अलग-अलग धर्म हैं, ईश्वर के बारे में उनकी सभी अलग-अलग मान्यताएँ और उनकी विभिन्न प्रथाएँ, पूजा-पाठ, इत्यादि। ये सभी ईश्वर को खोजने और परम मोक्ष पाने की एक तरह की विलक्षण मानवीय इच्छा की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। और हिक का तर्क है कि यहाँ एक गहरी एकता है। हालाँकि, कई मामलों में विभिन्न धर्म बहुत अलग दिखते हैं, फिर भी सभी विभिन्न धर्मों में एक तरह की मूल समानता है।

उन्होंने आगे कहा कि हम इन विभिन्न मोक्ष परियोजनाओं का मूल्यांकन केवल तभी कर सकते हैं, जैसा कि वे उन्हें कहते हैं, जब तक हम मानव जीवन में उनके फल को देख पाते हैं। इसलिए, वे आध्यात्मिक परिवर्तन के कुछ अलग-अलग पैटर्न को अलग करते हैं। आपके पास संत या धार्मिक रूप से समर्पित लोग हैं जो दुनिया से अलग होकर, आप जानते हैं, प्रार्थना और ध्यान में

एक तरह से अलग हो जाते हैं जो बाकी दुनिया और मानवीय जुड़ाव से अलग होता है, जैसे कि एक मठवासी संदर्भ में।

जूलियन ऑफ नॉर्विच, श्री अरबिंदो या अन्य लोग ऐसा ही करेंगे और यही दृष्टिकोण अपनाएंगे। फिर आपके पास संत हैं जो स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर दुनिया को बदलना चाहते हैं, जो सांस्कृतिक प्रभाव डालने के संबंध में बहुत सक्रिय हैं, शायद अपने विश्वास के साथ राजनीतिक प्रभाव भी। जोन ऑफ आर्क या महात्मा गांधी जैसे लोग उस श्रेणी में आते हैं।

इसलिए, धार्मिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप व्यक्ति किस तरह का जीवन जीता है, इस संदर्भ में दृष्टिकोणों की एक पूरी श्रृंखला है। इसलिए, अंत में, हालांकि, धार्मिक रूप से समर्पित लोगों में कुछ विशेषताएं देखी जाती हैं, जैसे कि वे अपने विश्वास को लागू करने में अलगाववादी या कार्यकर्ता दृष्टिकोण अपनाते हैं। लेकिन हम उस तरह के व्यवहार की पहचान कैसे करें जो ईश्वरीय वास्तविकता के प्रति उचित अभिविन्यास को दर्शाता है? हिक का जवाब है कि विश्व धर्म की साझा नैतिक अंतर्दृष्टि द्वारा निहित नैतिक मानदंडों का उपयोग करके, अर्थात हमें दूसरों के प्रति निःस्वार्थ सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए, जैसा कि वे कहते हैं, जिसे हम प्रेम या करुणा कहते हैं।

यह धार्मिक परिवर्तन के नैतिक मूल तक पहुँचना है। जब हम दुनिया के धर्मों में आस्थावानों को देखते हैं, चाहे वह ईसाई धर्म हो या यहूदी धर्म, इस्लाम, हिंदू धर्म या बौद्ध धर्म, हम प्रेम और करुणा के इन गुणों को लगातार पाते हैं। हिक कहते हैं कि व्यक्तिगत गुण विभिन्न धार्मिक - सांस्कृतिक परंपराओं में लगभग एक जैसे हैं, और वह निष्कर्ष निकालते हैं कि, उद्धरण, हमारे पास यह मानने का कोई अच्छा कारण नहीं है कि महान धार्मिक परंपराओं में से किसी एक ने खुद को दूसरे की तुलना में प्रेम या करुणा के लिए अधिक उत्पादक साबित किया है।

इसलिए, अगर कोई विभिन्न धार्मिक परंपराओं, खासकर यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, इत्यादि जैसी प्रमुख धार्मिक परंपराओं पर ईमानदारी से नज़र डाले तो धार्मिक परंपराओं की सद्गुणों को प्रेरित करने की क्षमता के मामले में एक तरह की समानता है। इसलिए, हिक स्थिति का एक तरह का कांटियन विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, जिसमें कहा गया है कि, उद्धरण, मन धारणा में सक्रिय है, धार्मिक संदर्भ में या जब ईश्वर या परम आध्यात्मिक वास्तविकता के दृष्टिकोण की बात आती है तो व्यक्ति जो अनुभव करता है उस पर अपने स्वयं के वैचारिक संसाधनों और आदतों को लागू करता है। वह इसे कांटियन कहते हैं क्योंकि कांट की ज्ञानमीमांसा, संक्षेप में, यह थी कि हम दुनिया को एक तरह के अनफ़िल्टर्ड, शुद्ध तरीके से नहीं देखते हैं।

मन प्रकृति का एक सरल दर्पण मात्र नहीं है, बल्कि मन कुछ तर्कसंगत श्रेणियों और वैचारिक रूपों का योगदान देता है जिनके माध्यम से हम दुनिया की व्याख्या करते हैं। अब, हम आम तौर पर यह नहीं देखते कि हम ऐसा कर रहे हैं, लेकिन यह मानव मन की प्रकृति है, वास्तविकता पर एक तरह की संरचना थोपना ताकि हम चीजों को एक निश्चित तरीके से समझ सकें और दुनिया के बारे में एक निश्चित तरीके से अवधारणा बना सकें और सोच सकें। कांट का मानना था कि यह मानव ज्ञानात्मक स्थिति के लिए मौलिक है और यहां तक कि अंतरिक्ष और समय जैसी चीजें और

मात्रा और गुणवत्ता के संदर्भ में वस्तुओं के बारे में सोचना भी ऐसी अवधारणाएं हैं जिन्हें मन वास्तविकता पर थोपता है, और हम वास्तव में नहीं जानते कि दुनिया अपने आप में कैसी है।

हम बस इतना जानते हैं कि दुनिया कैसी है, क्योंकि हम इसका अनुभव करते हैं। यह एक बुनियादी कांटियन ज्ञानमीमांसा कदम है। हिक का मानना है कि ईश्वर की हमारी अवधारणा और हम दिव्य वास्तविकता को कैसे देखते हैं, इस दृष्टिकोण को अपनाना मददगार है, और वह विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों को हमें तर्कसंगत श्रेणियां प्रदान करने के रूप में देखते हैं जिन्हें हम दिव्य पर अपने दृष्टिकोण पर लागू करते हैं।

तो, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, हिक कहते हैं कि हमें ये दो कदम उठाने चाहिए। सबसे पहले, एक परम पारलौकिक दिव्य वास्तविकता की कल्पना करें जो मानवीय अवधारणाओं और प्रत्यक्ष अनुभव के दायरे से परे हो। हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि एक दिव्य वास्तविकता है जो अपने आप में एक तरह की धार्मिक या आध्यात्मिक है, और हमें कांटियन भाषा का उपयोग करने की आवश्यकता है जो हमारी सोच से स्वतंत्र रूप से मौजूद है।

यही वह परम वास्तविकता है जो वहाँ है। हम इस चीज़ को पाने की कोशिश कर रहे हैं। और विभिन्न, और यह दूसरा बिंदु है, विभिन्न धार्मिक देवता और निरपेक्षताएँ मानव चेतना के विभिन्न ऐतिहासिक रूपों के भीतर वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ हैं।

सभी विभिन्न धार्मिक सिद्धांत, सिद्धांत और धर्मशास्त्र, हाँ, उस परम वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ या अभिव्यक्तियाँ हैं, जैसा कि हम इन श्रेणियों के माध्यम से व्याख्या करते हैं। तो, आपके पास परम वास्तविकता है, अपने आप में दिव्य, और फिर आपके पास वह वास्तविकता है जिसे हम इन धार्मिक, धार्मिक श्रेणियों और अवधारणाओं के माध्यम से अनुभव करते हैं। और क्योंकि पूरे धर्म कुछ अवधारणाओं और श्रेणियों पर निर्भर करते हैं, इसलिए आपके पास कुछ बहुत ही अलग तरह की धार्मिक परंपराएँ हैं, और उनमें से कई तरह की परंपराएँ उभरती हैं, भले ही वे एक ही चीज़ पर पहुँच रही हों।

ऐसा इसलिए है क्योंकि अवधारणाएँ और श्रेणियाँ संस्कृति से संस्कृति और समय-समय पर भिन्न होती हैं। इसलिए, हिक यहाँ कुछ स्पष्टीकरण देते हैं। पहला, यह कहना कि विश्व धर्मों द्वारा पूजे जाने वाले देवता वास्तविकता के आभास हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे भ्रम हैं।

वह यह नहीं कह रहे हैं कि ये शुद्ध कल्पना हैं क्योंकि ये एक तरह की व्याख्यात्मक युक्तियां हैं। वहाँ एक वास्तविकता है, लेकिन उस वास्तविकता की व्याख्या विभिन्न धार्मिक समूहों और परंपराओं द्वारा अलग-अलग तरीकों से की जाती है। इसलिए, फिर से, कांट के साथ सादृश्य उपयुक्त है क्योंकि कांट का मानना नहीं है कि हमारा वर्तमान अनुभव भ्रामक या काल्पनिक है।

वह बस यही मानता है कि इसकी व्याख्या की गई है। यह वास्तव में जो है उसे पर्याप्त रूप से या अंततः सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं करता है। वास्तव में, हम यह नहीं जान सकते कि वस्तु अपने आप में कैसी है, क्योंकि हम हमेशा अपनी तर्कसंगत श्रेणियों के माध्यम से इसकी व्याख्या करते रहते हैं।

और यहाँ भी यही होगा, हिक कहते हैं, परम वास्तविकता, ईश्वर के प्रति हमारे धार्मिक दृष्टिकोण के संदर्भ में, क्योंकि हम हमेशा इसकी व्याख्या करते रहते हैं और इसके माध्यम से एक तरह की व्याख्या प्राप्त करते हैं, चाहे हमारा धार्मिक या धार्मिक ढांचा कुछ भी हो। आप जानते हैं, हम वास्तव में ईश्वरीयता को स्वयं प्राप्त नहीं कर सकते हैं, लेकिन हमारी व्याख्याएँ, वे केवल कल्पनाएँ भी नहीं हैं। वे व्याख्याएँ और दृष्टिकोण हैं जो हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली धार्मिक और धार्मिक श्रेणियों से प्रभावित होते हैं।

दूसरे, यह कहना कि वास्तविक मानवीय अवधारणाओं की सीमा से परे है, इसका मतलब यह नहीं है कि औपचारिक तार्किक अवधारणाएँ उस पर लागू नहीं होतीं। इसलिए, वे कहते हैं कि कांटियन विश्लेषण धर्म की प्रकृतिवादी व्याख्या का सबसे अच्छा विकल्प है, जिसमें कहा गया है कि ईश्वर के ऐसे सभी अनुभव केवल मानसिक प्रक्षेपण और मानवीय कल्पना की रचना हैं। इसलिए, वे धर्म की प्रकृतिवादी व्याख्या को अस्वीकार करते हैं।

कांटियन विश्लेषण इस प्राकृतिक विचार का विरोध करने का सबसे अच्छा तरीका है कि यह सब कुछ है; ये सभी धर्म शुद्ध कल्पना की कल्पना कर रहे हैं। नहीं, यह वास्तविक है। परम वास्तविकता, ईश्वर की वास्तविकता, वास्तविक है।

हम यह नहीं जान सकते कि यह अपने आप में क्या है। हिक ने कई स्तरों पर धर्मों के बीच सैद्धांतिक मतभेदों को पहचाना है। उनमें से एक है परम वास्तविकता, वास्तविक की प्रकृति की उनकी अवधारणाओं के संदर्भ में।

दूसरा, आध्यात्मिक मान्यताओं के संदर्भ में, धर्म इस संबंध में भी भिन्न हैं। ब्रह्मांड के वास्तविक से संबंध के बारे में मान्यताएँ। सृष्टि शून्य से हुई है, या यह ईश्वर की सत्ता से दुनिया का एक तरह का उद्भव है? ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में आपके अलग-अलग विचार हैं।

मानव नियति, आप एक जीवन जीते हैं और फिर यह हमेशा के लिए परलोक है। या फिर पुनर्जन्म की व्यवस्थाएँ हैं, स्वर्ग और नरक के बारे में विचार हैं? उन आध्यात्मिक मान्यताओं के बारे में दुनिया के धर्मों में सभी तरह के मतभेद हैं। ऐतिहासिक मुद्दे एक और तरीका है जिससे धर्म सैद्धांतिक रूप से भिन्न होते हैं।

यीशु, नाज़रेथ, मुहम्मद, गौतम, बुद्ध, इत्यादि की प्रकृति और उनके कारनामों के बारे में मान्यताएँ। हिक ने निष्कर्ष निकाला कि हमें पुराने बहिष्कारवादी सिद्धांत को अस्वीकार करना चाहिए कि मोक्ष ईसाई धर्म तक ही सीमित है। उन्होंने कार्ल रेनर के समावेशवादी दृष्टिकोण पर ध्यान दिया कि "अन्य धर्मों के भक्त लोग अदृश्य चर्च के भीतर गुमनाम ईसाई हैं, भले ही उन्हें इसकी जानकारी न हो, और इस प्रकार मोक्ष के क्षेत्र में हैं।"

यहां तक कि हाल ही में एक पोप ने भी कहा कि हर व्यक्ति, बिना किसी अपवाद के, मसीह द्वारा छुड़ाया गया है। कभी-कभी, आप ऐसे लोगों को सुनेंगे जो कम से कम समावेशी भाषा में, धार्मिक रूप से रूढ़िवादी लोगों से बात करते हैं, जो मानते हैं कि ईश्वर की दया में एक निश्चित व्यापकता है, जैसा कि क्लार्क पिनॉक ने एक बार कहा था। लेकिन क्या यह पूरी तरह से जाता है? क्या यह

जॉन हिक जैसे किसी व्यक्ति के धार्मिक बहुलवाद तक पूरी तरह से जाता है, जहां आप जानते हैं, सभी या कम से कम कई धर्म ईश्वर की तलाश करने वाले व्यक्ति को मोक्ष प्रदान करने में समान रूप से प्रभावी हैं? एक अधिक बहिष्कारवादी किस्म का व्यक्ति, लेकिन मैं कहूंगा कि एक उदार बहिष्कारवादी, ब्रिटिश विद्वान कीथ वार्ड है।

वार्ड हिक और उनके बहुलवादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हैं, और यहाँ बताया गया है कि वार्ड बहुलवादी थीसिस को कैसे चित्रित करते हैं। यह वार्ड को उद्धृत करते हुए, वे कहते हैं कि धर्म एक पारलौकिक वास्तविकता के लिए अलग-अलग वैध लेकिन सांस्कृतिक रूप से वातानुकूलित प्रतिक्रियाएँ प्रदान करते हैं और स्वयं से परे जाने और उस वास्तविकता पर केंद्रित एक असीम रूप से बेहतर स्थिति प्राप्त करने के तरीके प्रदान करते हैं। यह वार्ड का बहुलवाद को संक्षेप में प्रस्तुत करने का तरीका है।

इसके अलावा, इस दृष्टिकोण से, सभी को अपनी धार्मिक परंपराओं का पालन करके बचाया जा सकता है या बचाया जा सकता है। बहुलवादी होने के लिए आपको सार्वभौमिकवादी होने की आवश्यकता नहीं है। आप सार्वभौमिकवादी हुए बिना भी बहुलवादी हो सकते हैं।

आप बहुलवादी हुए बिना भी सार्वभौमिकवादी हो सकते हैं। यहाँ सभी तरह के संयोजन हैं, लेकिन बहुत से बहुलवादी सार्वभौमिकवादी हैं। चूँकि सभी दावे किसी चीज़ की पुष्टि करते हैं, इसलिए उन्हें कुछ चीज़ों को बाहर भी करना चाहिए, वार्ड ने कहा।

इस कारण से, वे कहते हैं, उद्धरण, सभी सत्य दावे अनिवार्य रूप से अनन्य हैं। वे यह भी कहते हैं कि सभी संभावित धार्मिक परंपराएँ समान रूप से सत्य, प्रामाणिक या वैध नहीं हो सकती हैं। जब ईश्वर और मोक्ष की प्रकृति आदि के बारे में विशेष धर्मों के दावों की बात आती है तो यहाँ असंगति होती है।

जिस हद तक वे दावे करते हैं, तब विचारों में विरोधाभास या परस्पर असंगति की संभावना होती है। इसलिए, वार्ड उस बात को खारिज करता है जिसे वह अति बहुलवाद कहता है, संभवतः यह धारणा कि सभी धर्म समान रूप से सत्य हैं। यह संभव ही नहीं है क्योंकि वे प्रतिस्पर्धी दावे करते हैं।

लेकिन फिर वार्ड बहुलवाद के एक संस्करण को अलग करता है जिसे वह कठोर बहुलवाद कहता है, जो उसके द्वारा कहे जाने वाले चरम बहुलवाद से अलग है। कठोर बहुलवाद वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार कई प्रमुख धर्मों में परस्पर अनन्य विश्वास नहीं होते हैं, बल्कि वे मोक्ष और वास्तविक के प्रामाणिक अनुभव के समान रूप से वैध मार्ग हैं। फिर से, कई असंगत सत्य दावे हैं जो धर्मों को विभाजित करते हैं, इसलिए यह कठोर बहुलवाद के लिए समस्याग्रस्त है।

यहाँ, हिक या कट्टर बहुलवादी उत्तर दे सकते हैं कि यह वास्तविक और उद्धार प्रक्रिया के ज्ञान के लिए अप्रासंगिक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके पास असंगत सत्य दावे हैं। यह अभी भी संभव है कि ये विभिन्न धर्म विश्वासियों को मोक्ष तक पहुँचाने के साधन के रूप में समान रूप से प्रभावी हो सकते हैं।

इसके अलावा, कट्टर बहुलवादी कहेंगे कि वास्तविक, अंततः, और हिक इस बिंदु पर बड़े हैं, अकथनीय है। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे शब्दों में रखा जा सके या मानव भाषा और श्रेणियों में व्यक्त किया जा सके। यह मानवीय विचार की समझ से परे है।

मुझे लगता है कि वार्ड ने यहाँ एक अच्छा जवाब दिया है। वह कहते हैं कि अगर वास्तविक अकथनीय है, अगर परम वास्तविकता मानवीय विचार और भाषा की समझ से परे है, तो हम कैसे जान सकते हैं कि यह मौजूद है? क्या आप दोनों तरह से हो सकते हैं? क्या आप यह मान सकते हैं कि कुछ मानवीय विचार और भाषा की समझ से परे है, लेकिन फिर भी आश्वस्त हो सकते हैं कि यह वहाँ है? तो यह कठोर बहुलवाद के लिए एक समस्या है। वह कहते हैं कि अगर कोई सत्य दावा वास्तविक पर लागू नहीं हो सकता है, तो हम इसके बारे में कुछ कैसे कह सकते हैं? हम कैसे सिद्धांत बना सकते हैं, जैसा कि हिक करते हैं, इस हद तक कि उन्हें विश्वास है कि एक परम वास्तविकता है जो सभी विशेष धार्मिक श्रेणियों से परे है? यदि यह इतना पारलौकिक है, तो हम कैसे निश्चित रूप से जान सकते हैं कि यह वहाँ है या कोई विश्वास है कि व्याख्यात्मक धार्मिक और धार्मिक रूपरेखाओं से परे एक परम वास्तविकता है जिसे हम कथित तौर पर उस पर लागू करते हैं? और अगर वास्तविक अज्ञात है, तो हम कैसे जान सकते हैं कि इसके बारे में सभी दावे समान रूप से मान्य हैं? आपको यह जानना होगा कि परम वास्तविकता क्या है, ताकि आप विभिन्न धर्मशास्त्रीय और धार्मिक रूपरेखाओं का आकलन कर सकें और उसकी व्याख्या करने के प्रयासों में सक्षम हो सकें।

इसलिए, परम वास्तविकता और उसके निहितार्थों की अज्ञातता के बारे में दावों के संदर्भ में यहाँ एक असंगति प्रतीत होती है। जबकि हम परम वास्तविकता के बारे में काफी कुछ जान सकते हैं, हमें यह भी जानना होगा कि इस वास्तविकता की व्याख्या करने में विभिन्न धार्मिक परंपराएँ अपनी सटीकता में लगभग समान हैं। वार्ड ने नोट किया कि एक्विनास, थॉमस एक्विनास ने कहा कि हमारे पास ईश्वर के बारे में वास्तविक, भले ही सादृश्यात्मक, ज्ञान है, लेकिन हम ईश्वर की प्रकृति को स्वयं में नहीं समझ सकते। यह ईश्वर का सार है जो अकथनीय है।

यह थॉमिस्ट दृष्टिकोण पुष्टि करता है कि ईश्वरीय अकथनीयता की हमारी मान्यता ईश्वर के वास्तविक ज्ञान पर आधारित है। तो, आप जानते हैं, एक्विनास निश्चित रूप से यहाँ हिकियन बहुलवादी नहीं है। हमारे पास ईश्वर का वास्तविक ज्ञान है। भले ही यह सादृश्यात्मक ज्ञान हो, यह वास्तविक है।

और भले ही हम अपनी क्षमता के मामले में सीमित हों या ईश्वर के सच्चे सार को समझने की हमारी क्षमता से दूर हों, फिर भी हमें ईश्वर का ज्ञान है। इसलिए वार्ड के अनुसार हिक द्वारा की गई त्रुटि, कांटियन त्रुटि यह है कि कांट ने कहा कि नौमेनल वास्तविकता हमारे द्वारा अनुभव किए जाने वाले सभी अभूतपूर्व अनुभवों का कारण है। लेकिन इसे बनाए रखने में, कांट, उद्धरण, संज्ञानात्मक अर्थ की स्वीकार्य सीमा से परे मन की श्रेणियों को लागू करता है, जैसा कि वार्ड कहते हैं।

वह दावा कर रहा है कि वह अपने ज्ञानमीमांसा से ज़्यादा ज्ञान का दावा कर रहा है। अगर नौमेनल या इन खुद ही मानवीय संज्ञान की पहुँच से परे है, तो वह इसके बारे में इतना कैसे कह

सकता है? वार्ड कहते हैं कि, कांट की तरह, जॉन हिक भी, उद्धरण, वास्तविक के बारे में सैद्धांतिक दावों को पूरी तरह से त्यागने में असमर्थ हैं। यह अनूठा है।

धार्मिक बहुलवाद के बचाव में दावे करने के संदर्भ में भी, हिक उस परम वास्तविकता के बारे में दावे करने से खुद को नहीं रोक पाते हैं जिसके बारे में उनका कहना है कि हम अंततः नहीं जान सकते। इसके अलावा, वार्ड कहते हैं कि हिक वास्तविकता के बारे में दावे करने में बहुत दूर तक नहीं जाते हैं। उनका कहना है कि बेहतर होगा कि वे कांटियन लाइन को छोड़ दें कि वास्तविक नौमेनल है या अंततः मानव मन की पहुंच से परे है और बस इतना कहें कि वास्तविक वास्तविकता और मूल्य की एक परम एकता है।

यह बेहतर होगा। यह एक विशेष दृष्टिकोण के साथ अधिक तालमेल में होगा। वार्ड ने नोट किया कि हिक इस बात की पुष्टि करते हैं कि मानव गतिविधि का एक उचित लक्ष्य है, जो वास्तविकता-केंद्रित जीवन है, और यह पूर्वधारणा है कि इसे सचेत रूप से प्राप्त किया जाना चाहिए, जिसका अर्थ है कि इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के पास कुछ सही विश्वास होने चाहिए।

तो फिर, हिक में कुछ प्रमुख बहिष्कारवादी विचारों की मौन स्वीकृति है जिससे वह दूर नहीं हो सकता। लेकिन अगर ऐसा है, तो वार्ड कहते हैं, हम पूछ सकते हैं कि बचाए जाने के लिए किसी को किस तरह के विश्वास रखने चाहिए। यह एक बहुत ही दिलचस्प सवाल उठाता है। एक ईसाई के रूप में, मोक्ष प्राप्त करने के लिए किसी को वास्तव में क्या विश्वास करना चाहिए? विश्वास किस हद तक आवश्यक हैं? क्या किसी व्यक्ति को बचाए जाने के लिए एक निश्चित प्रकार के विश्वास आवश्यक हैं? यहाँ बहुत सारे दिलचस्प सवाल हैं।

यदि आप इस बात पर जोर देते हैं कि, ठीक है, ईसाई मुक्ति के लिए कुछ निश्चित विश्वास, कुछ संज्ञानात्मक अवस्थाएँ आवश्यक हैं, तो यह इस संभावना को खारिज कर देगा कि छोटे बच्चों, शिशुओं या गर्भपात किए गए भ्रूणों को कभी भी बचाया जा सकता है। उनके पास अभी तक ईसाई विचारों की कोई संज्ञानात्मक स्वीकृति नहीं है। मैंने जितने भी ईसाइयों को जाना है, उनका मानना है कि कम से कम बहुत से, यदि सभी नहीं, तो गर्भ में मरने वाले शिशुओं और भ्रूणों को बचाया जाता है।

तो स्पष्ट रूप से, यदि कोई इस दृष्टिकोण को अपनाता है, तो परमेश्वर ऐसे बहुत से लोगों को बचाने में सक्षम है और बचाता भी है, जिनके पास ईसाई सत्य के बारे में किसी भी तरह का संज्ञानात्मक ज्ञान नहीं है। तो, क्या लोगों की उम्र बढ़ने के साथ चीजें बदल जाती हैं? यह एक मानक दृष्टिकोण होगा कि एक बार जब आप संज्ञानात्मक परिपक्वता की एक निश्चित उम्र तक पहुँच जाते हैं, तो यह एक आवश्यकता बन जाती है। लेकिन वह उम्र क्या है? यहाँ एक अस्पष्टता की समस्या है।

तो, मोक्ष के प्रश्नों के संदर्भ में तर्कसंगत जवाबदेही का पूरा प्रश्न एक बहुत ही दिलचस्प प्रश्न है जो यहाँ संबंधित है। तो, आप सही कह रहे हैं; यह वह प्रश्न है जिससे हम सभी को जूझना चाहिए जो आस्तिक हैं और विशेष रूप से ईसाई हैं। चाहे कोई बहिष्कारवादी हो, समावेशवादी हो या बहुलवादी हो, मोक्ष के लिए वास्तव में आवश्यक शर्त क्या है? वार्ड का जवाब है कि तत्वमीमांसा

वह नहीं है जो हमें बचाती है। ईसाइयों के लिए, ईश्वर का कार्य जीवों को ज्ञान और उसके प्रेम में स्थापित करना है।

मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से एक सुरक्षित और सही दावा है। ईश्वर ही वह है जो हमें हमारे उद्धार में स्थापित करता है। लेकिन फिर भी, यह एक अलग सवाल है।

भले ही आप इसे इस तथ्य की अभिव्यक्ति या लक्षण के रूप में देखना चाहें कि ईश्वर किसी के जीवन में उद्धारक रूप से काम कर रहा है , लेकिन हमारे विश्वासों के संदर्भ में संज्ञानात्मक रूप से हमारे लिए इसके किस तरह के परिणाम या संकेतक होंगे? आप उन शब्दों में निम्नलिखित के बारे में बात कर सकते हैं: मनुष्य के लिए संज्ञानात्मक मोक्ष के संकेतक क्या हैं? यहाँ, वार्ड बहुलवाद का एक और संस्करण सुझाता है, जिसे वह उचित और महत्वपूर्ण मानता है। वह इसे नरम बहुलवाद कहता है, यह दृष्टिकोण कि वास्तविकता कई परंपराओं में प्रकट हो सकती है और मनुष्य उनमें उचित रूप से इसका जवाब दे सकते हैं। जो वास्तव में धार्मिक समावेशवाद जैसा लगता है।

सीएस लुईस जैसे व्यक्ति का समावेशवाद। वह एक तरह के ईसाई समावेशवादी थे कि ईश्वर कुछ लोगों के दिलों में ईसाई उद्धार में काम कर सकता है और करता भी है, यहां तक कि अन्य धार्मिक संदर्भों में या ऐसी स्थितियों या संदर्भों में भी जहां किसी व्यक्ति द्वारा औपचारिक धार्मिक व्यवस्था को अपनाया ही नहीं जाता। इसलिए, ईसाई समावेशवादी के अनुसार, मनुष्य के लिए उद्धार के मार्ग के बारे में एक विशेष सत्य है, और वह है मसीह के माध्यम से किसी व्यक्ति के जीवन में ईश्वर की कृपा के माध्यम से, लेकिन ईश्वर औपचारिक ईसाई धार्मिक अभ्यास के संदर्भों के बाहर भी ऐसा कर सकता है।

सवाल यह है कि, यह किस रूप में होगा? खैर, यह स्थिति के आधार पर कई रूप ले सकता है। इसलिए, यह एक समावेशी दृष्टिकोण होगा। मुझे लगता है कि वार्ड यहाँ यही कहना चाह रहा है।

इसलिए, हिक्स बहुलवाद की वार्ड की आलोचना को संक्षेप में कहें तो, हिक्स बहुलवाद फिर से पुष्टि करता है कि कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से अज्ञात है जो अंतिम वास्तविकता है, अंतिम दिव्य वास्तविकता है। इसके सभी अनुभव समान रूप से प्रामाणिक हैं और इसके पूर्ण अनुभव के सभी मार्ग समान रूप से वैध हैं। समस्या यह है, जैसा कि वार्ड ने कहा है, अगर ऐसा है कि कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से अज्ञात है, तो पहला प्रस्ताव सत्य है, तो दूसरे और तीसरे प्रस्ताव पर जोर नहीं दिया जा सकता है।

हम यह नहीं जान सकते कि इसके सभी अनुभव समान रूप से प्रामाणिक हैं और हम यह नहीं जान सकते कि इसके पूर्ण अनुभव के सभी मार्ग समान रूप से वैध हैं। इसलिए, हिक ऐसे दावे कर रहे हैं जिन्हें तर्कसंगत रूप से उचित ठहराने का उनके पास कोई तरीका नहीं है। तो, यह हिक्स का बहुलवाद है और यह वार्ड की धार्मिक बहुलवाद की आलोचना है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 12, धार्मिक बहुलवाद है।